ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 96-101

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

जनसंख्या वृद्धि एवं उसकी परिवर्तनशील प्रवृत्तियां :टिहरी गढ़वाल ;उत्तराखण्डद्ध के सन्दर्भ में

डॉ0 सूरत सिंह बलूड़ी

एसो0 प्रो0 –भूगोल विभाग, श0दु0म0रा0स्ना0 महाविद्यालय, डोईवाला–देहरादून (उत्तराखण्ड) भारत

Received-08.04.2022, Revised-13.04.2022, Accepted-17.04.2022 E-mail: mahikumar2015@gmail.com

सारांशः – *किसी भी राष्ट्र की जनसंख्या उनकी पूंजी अथवा महत्वपूर्ण संसाधन होती है। जब उसकी वृद्धि उपयुक्त आकार एवं श्रेष्ठ गुणात्मक विभिन्नताओं के आधार पर हो, अन्यथा यह विकास की गति को प्रभावित करती है। विश्व के अधिकांश भागों में लम्बी अवधि तक उच्च जन्म तथा उच्च मृत्यु दर से सन्तुलन बना रहा जनसंख्या के बढ़ने की प्रवृत्ति प्राकृतिक है, विशेषकर विकासशील देशों में या पिछड़े क्षेत्रों में। इन क्षेत्रों में जन्म दर तो प्राचीन काल से ही अधिक रही है लेकिन आधुनिक काल में बीमारियों पर नियन्त्रण कर लिया गया है जिससे मृत्युदर कम हो गयी है और जनसंख्या की वास्तविक वृद्धि दर बढ़ गयी है। जबकि विकसित राष्ट्रों में उच्च जीवन स्तर जीवन की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए जनसंख्या वृद्धि को शून्य कर दिया है। हमारे देश में परिवार कल्याण एवं जनसंख्या नियोजन सही ढंग से प्रभावी नहीं हो पाया है। यही दशा उत्तराखण्ड क्षेत्र की है वास्तव में जनसंख्या विकास का मूल कारण मानव संस्कृतियों का विकास है। स्पेन्सर, जे.ई. (1971) ने स्पष्ट किया है की "The grouth of population of the world prior to the invenstion of food population was so slow as to be all but imperceptible.*

प्रस्तुत शोध पत्र में टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) के जनसंख्या वृद्धि के स्वरूप का अध्ययन के साथ ऐसे भागों को पहचान करनी है, जहां पर जनसंख्या वृद्धि दर अधिकतम एवं न्यूनतम रही है। इस जिले में जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण, सामाजिक संरचना, संसाधनों की उपलब्धता, जन सुविधाएं (स्वास्थ्य, शिक्षा) आदि ने प्रभावित किया है।

कुंजीभूत शब्द– संसाधन, श्रेष्ठ गुणात्मक, सन्तुलन, जनसंख्या, प्राकृतिक, विकासशील देशों , आधुनिक काल, बीमारियों ।

विष्व के विकसित राष्ट्रों की मेखला में कुल जनसंख्या का 25 प्रतिशत भाग निवास करना है जबकि 85 प्रतिशत संसाधन यहां उपलब्ध हैं। इसके विपरीत विकासशील कटिबन्ध में कुल संसाधनों का मात्र 15 प्रतिशत भाग उपलब्ध है। जबकि विश्व जनसंख्या का 75 प्रतिशत भाग यहां निवास करता है जनसंख्या किसी देश का महत्वपूर्ण संसाधन है। जिससे न केसल प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग संभव हो पाता है वरन कुषल, प्रशिक्षित और कठिन श्रम शक्ति द्वारा आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त हो पाता है। यही कारण है कि आज विश्व में जिन राष्ट्रों ने तरक्की की है उनकी वास्तविक शक्ति मानव संसाधन का सही ढंग से उपयोग रहा ळै। किसी भी राष्ट्र की जनसंख्या को मात्रात्मक एवं गुणात्मक संरचना तथा आर्थिक विकास सूचकांकों के घनिष्ट सम्बन्ध है। प्रो0 रिचर्डगिल ने कहा है कि ''आर्थिक विकास एक यांत्रिक प्रक्रिया के साथ मानवीय उपक्रम भी है''। प्रो0 क्रोबर ने मानव संसाधन में अपना मत प्रकट करते हुए कहा कि ''समृद्ध वातावरण के बीच भी समुदाय एवं राष्ट्र निर्धन रहे हैं, प्रचुर व उत्तम कोटि के प्राकृतिक संसाधनों के होते हुए भी मानवीय संसाधन की न्यूनता के कारण ही राष्ट्र पतनोन्मुख हो गये हैं'' इस प्रकार के विचार को व्यक्त करते हुए कहा। प्रो0 ए0 मुखर्जी ने भी काहं कि ''किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहां के मानवीय संसाधन सबसे बड़ी पूंजी होती है, परन्तु उन संसाधनों के समुचित उपयोग न होने, नये रोजगार के अवसर प्रदान न करने आदि से राष्ट्र की जनसंख्या भारत स्वरूप बन जाती है''। पृथ्वी पर आदि काल से मानव ने प्रकृति के विभिन्न तत्वों में परिवर्तन करके सांस्कृतिक भू–दृश्यों का निर्माण किया है। किसी भी क्षेत्र या राष्ट्र में जनसंख्या तथा संसाधनों में घनिष्ट सम्बन्ध होता है यह सम्बन्ध उत्पादन एवं आपूर्ति और मानवीय जीवन स्तर में स्पष्ट दिखायी देता है अगर इन सम्बन्धों में असन्तुलन बनता है तो उस क्षेत्र या राष्ट्र के आर्थिक विकास में भिन्नता मिलती है।

अध्ययन क्षेत्र– टिहरी गढ़वाल उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल मण्डल के उत्तर में स्थित एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। जबकि प्राकृतिक संसाधन (जल, जंगल, जमीन) की इस क्षेत्र में प्रमुखताः होने के कारण किसी प्रकार मानव इससे सामजस्य स्थापित करके अपने आर्थिक–सामाजिक विकास का निर्धारण करता है की विवेचना करना आवश्यक हो जाता है।

टिहरी गढ़वाल एक पर्वतीय जिला है इसका अंक्षाशीयय विस्तार 3003 से 3053 उत्तर तथा देशान्तरीय 7756 से 7904 पूर्व है। 09 नवम्बर 2000 ई0 को उत्तर प्रदेश से अलग होने के साथ ही यह जिला उत्तराखण्ड में शामिल हो गया इसका पुनर्गठन एक बार पुनः तब हुआ जब इसके जखोली क्षेत्र पंचायत को पड़ोसी जिले रूद्रप्रयाग में शामिल किया गया। 3642 वर्ग कि0मी0 वर्ग कि0मी0 में विस्तृत इस जनपद की भौगोलिक सीमायें पूर्व में रूद्रप्रयाग, पश्चिम में देहरादून, उत्तर में उत्तरकाशी तथा दक्षिण में पौड़ी गढ़वाल जिलों की सीमाओं से मिलती है। इसका सम्पूर्ण क्षेत्र ऊंची पहाडियों एवं नदी घाटियों से मिलकर बना है। इस जनपद में भागीरथी, भिलंगना, अलकनन्दा, बालगंगा, धर्मगंगा अपवाह तन्त्र बनाती है। टिहरी गढ़वाल

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

की जनसंख्या 2011 के गणनानुसार 6,18,931 है। एवं जनघनत्व 169 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। 2011 के अनुसार 1000 पुरूषों पर 1087 स्त्रियां हैं। 2011 में औसत तापमान 27.6 सेन्टीग्रेट तथा न्यूनतम 9.5 सेन्टीग्रेट रहा। इस जनपद में 09 विकासखण्ड है।

विधि तन्त्र एवं आंकड़ों के स्त्रोत– प्रस्तुत शोध में द्वितीय आकड़ों के अर्न्तगत विभिन्न कार्यालयों शोध प्रबन्ध जिला सांख्यिकीय पुस्तिका भारत सरकार जनगणना, इन्टरनेट से आंकड़ों का सहारा लिया गया है।

विधितन्त्र एवं आंकड़ों के स्त्रोत– प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद टिहरी गढ़वाल जनसंख्या का विश्लेषण तीन भागों में बांटकर किया गया है। पहले भाग में जनसंख्या वृद्धि स्त्री–पुरूष विवरण है जबकि द्वितीय भाग में जनपद, उत्तराखण्ड एवं भारत में दशकीय वृद्धि, परिवर्तन प्रतिशत के आधार पर किया गया है। तृतीय भाग में जनसंख्या घनत्व परिवर्तनशील स्वरूप का अध्ययन किया गया है।

मानव संसाधन एवं जनसंख्या वृद्धि प्रारूप– भौगोकिल अध्ययन में जनसंख्या की विशेषताओं का अध्ययन को एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है (चौरसिया एवं शर्मा 2009)। किसी भी जनसंख्या की लिंग संख्या अध्ययन में वहां की जनसंख्या की लिंग संरचना का वैज्ञानिक दृष्टि अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। उस क्षेत्र की क्रियाशील जनसंख्या का आकार, आयु वर्ग एवं स्त्री–पुरूष अनुपात के अध्ययन के बिना मानवीय–संसाधन का सफल नियोजन सम्भव नहीं हो सकता। मानवीय संसाधन के क्षेत्र या समावेशी नियोजन के अभाव में कोई राष्ट्र सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से समृद्ध नहीं हो सकता। जनसंख्या वितरण एवं वृद्धि के अध्ययन के लिये वितरण, सकेन्द्रण, वातावरण, निवास, प्रवास, जन्मदर, मृत्युदर, आयु, संघटन, जनसंख्या, अनुपात (स्त्री–पुरूष, ग्रामीण–नगरीय), शैक्षिक स्तर, राष्ट्रीयता, जाति, भाषा, धर्म से सम्बन्धित आंकड़ों की मात्रात्मक माप की विशेषताओं की संरचना में होने वाले परितर्वनों का अध्ययन आवश्यक है।

जनपद टिहरी गढ़वाल तथा उत्तराखण्ड, भारत में जनसंख्या वृद्धि (%) में

श्रेणी	1991–2001			2001–2011			परिवर्तन		
	आन्तरिक मूल्य	विकास खण्डों की संख्या	कुल विकास खण्डों का %	आन्तरिक मूल्य	विकास खण्डों की संख्या	कुल विकास खण्डों का %	आन्तरिक मूल्य	विकास खण्डों की संख्या	कुल विकास खण्डों का %
निम्न	0–10	05	55.72	0–5	07	66.76	ऋणात्मक	04	31.35
मध्यम	0–20	03	33.73	5–10	01	21.58	0–10	04	56.98
उच्च	20 से अधिक	01	10.55	10–15	01	11.66	10 से अधिक	01	11.67
		09	100	–	09	100	–	09	100

आर्थिक दृष्टिकोण से जनपद टिहरी गढ़वाल एक पिछड़ा जिला है, इस जिले में प्रतापनगर, भिलगंना, जाखणीधार, जौनपुर, थौलधार, चम्बा, नरेन्द्रनगर, देवप्रयाग, कीर्तिनगर, विकासखण्ड है। जनसंख्या के 2001 एवं 2011 की जनसंख्या के आंकड़ों को आधार माना गया है। जिससे जनसंख्या की वृद्धि एवं परिवर्तनशील स्वरूप का तुलनात्मक परिदृश्य स्पष्ट हो सकें।

जनपद टिहरी गढ़वाल में जनसंख्या का विवरण

क्र. सं0	विकास खण्ड का नाम	जनसंख्या 2001			जनसंख्या 2011		
		कुल	स्त्री	पुरूष	कुल	स्त्री	पुरूष
1.	प्रतापनगर	57,627	30,494	27,133	62,618	32,784	29,834
2.	भिलगंना	1,07,118	57,871	49,247	1,09,756	60,290	49,466
3.	जाखणीधार	50,108	26,990	23,118	47,520	25,623	21,897
4.	जौनपुर	63,802	31,967	31,835	72,219	36,064	36,155
5.	थौलधार	51,386	26,262	25,124	43,403	23,138	20,265
6.	चम्बा	55,447	28,492	26,955	51,409	26,936	24,473
7.	नरेन्द्रनगर	61,156	31,840	29,316	63,588	32,528	31,060
8.	देवप्रयाग	52,729	28,541	24,188	51,713	27,531	24,182
9.	कीर्तिनगर	44,880	23,769	21,111	45,864	24,201	21,663
10.	बनवासियों	648	274	374	702	316	386
11	नगरीय	59,846	23,079	36,767	70,139	31,534	38,605
	समस्त विकासखण्ड	6,04,747	3,09,579	2,95,168	6,18,931	3,20,945	2,97,986

जनसंख्या वितरण प्रारूप– प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद टिहरी गढ़वाल की जनसंख्या 2011 गणना के अनुसार 6,04,747 व्यक्ति थी। जिसमें 2,94,168 पुरूष तथा 3,09,579 स्त्रिंया थी। 2011 जनगणना के अनुसार टिहरी जनपद के विकासखण्डों की जनसंख्या 6,18,931 व्यक्ति थी जिसमें 2,17,986 पुरूष तथा 3,20,945 स्त्रियां थी इस प्रकार 10 वर्षों के अन्तराल में 2,818 पुरूष एवं 11,266 स्त्रियों की जनसंख्या में वृद्धि के साथ कुल 14,184 व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि हुई।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

जनपद टिहरी गढ़वाल में जनसंख्या वृद्धि का परिवर्तनशील स्वरूप (%) में

क्र. सं0	दशक	जनपद टिहरी गढ़वाल		उत्तराखण्ड		भारत	
		जनसंख्या वृद्धि	परिवर्तन	जनसंख्या वृद्धि	परिवर्तन	जनसंख्या वृद्धि	परिवर्तन
1.	1961–71	14.20		24.42	–	24.80	–
2.	1971–81	24.74	+10.54	27.45	+3.03	24.75	–0.05
3.	1981–91	16.53	–8.21	24.23	–3.22	23.56	–1.19
4.	1991–2001	16.24	–0.29	19.20	–5.03	21.34	–2.22
5.	2001–2011	1.93	–14.31	19.17	–0.03	17.64	–3.7

वर्ष 2011 में जनपद टिहरी गढ़वाल की 10 प्रतिशत जनसंख्या विकासखण्ड प्रतापनगर में, 17.7 प्रतिशत जनसंख्या भिलंगना में 7.6 प्रतिशत जाखणीधार में 11.6 प्रतिशत जनजसंख्या जौनपुर में 7.0 प्रतिशत जनसंख्या थौलधार में, 8.3 प्रतिशत जनसंख्या चम्बा में लगभग 10.2 प्रतिशत जनसंख्या नरेन्द्रनगर में 8.3 प्रतिशत जनसंख्या देवप्रयाग एवं 7.4 प्रतिशत जनसंख्या कीर्तिनगर में तथा 0.11 प्रतिशत वनवस्तियां एवं 11.3 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती थी जनसंख्या वितरण का सही स्वरूप वर्ष 2001 में भी था। 2001 एवं 2011 विगत 10 वर्षों में जनसंख्या रूपरूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। स्थानीय स्तर पर भी जनसंख्या में वृद्धि लगभग समान रूप से हुई है।

जनसंख्या वृद्धि– तीव्र जनसंख्या विकास में कमी का मूल कारण नहीं है परन्तु विकासशील देशों की जटिल समस्याओं के निराकरण में इसे नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता है। तीव्र जनसंख्या वृद्धि विकास दर में कमी लाने में सहयोगी है खलनायक नहीं (Rapid population growth is the accomplice tham villain. जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास का प्रेरक है न कि बाधक (जूलियन) किसी क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि में उस क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक कारक एक दूसरे को प्रभाव डालते हैं। मर्त्यता, उत्पादकता तथा प्रवास नियन्त्रण करने वाले कारक समाज में बने हुए है तथा उन पर लोगों की परिदृष्ट तथा लोकनीति का गहरा प्रभाव डालता है दूसरी तरफ जनसंख्या वृद्धि सामाजिक तन्त्र तथा स्वाभावित वातावरण को सुधारती है, जनसंख्या और संसाधनों के अन्तर्सम्बन्ध के आधार पर जब किसी क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों के उपयोग के सन्दर्भ में आवश्यक जनसंख्या से कम जनसंख्या हो तो वहां जनाभाव अल्प जनसंख्या की स्थिति होती है ऐसे क्षेत्रों में जनसंख्या बढ़ती हुई जनसंख्या के भरण पोषण हेतु सक्षम होते हैं। जनपद टिहरी गढ़वाल के पहाड़ी भू–भाग में जनाभाव की स्थिति है। इसका प्रतिकूल प्रभाव सामाजिक–आर्थिक विकास पर पड़ा है। जनसंख्या वृद्धि का तात्पर्य जनसंख्या के अर्न्तगत उस विशेष के अर्न्तराल पर जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन से है। जो ऋणनात्मक एवं धनात्मक दोनों रूपों में परिलक्षित किया जाता है। (सिंह एवं राय 2010) जनपद टिहरी गढ़वाल में जनसंख्या वृद्धि का आंकलन विकासखण्ड स्तर पर किया गया है। जिसमें 2981,1991 एवं 2001,2011 की जनगणना से प्राप्त आंकड़ों को आधार माना गया है। प्रस्तुत तालिका 02 से स्पष्ट है कि 1961–1971 में मध्य टिहरी गढ़वाल की जनसंख्या वृद्धि 14,74 प्रतिशत थी। जो भारत, उत्तराखण्ड की औसत 14.74 एवं 27. 45) से कम है। 1971–1991 के मध्य टिहरी गढ़वाल की जनसंख्या वृद्धि 16.53 प्रतिशत थी जो कि भारत, उत्तराखण्ड की औसत 23-5vb6 एवं 24.23 प्रतिशत से कम रही है। जबकि 2001–2011 में जनपद टिहरी गढ़वाल में विकासखण्ड स्तर पर सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि जौनपुर विकासखण्ड में 16.19 प्रतिशत थी जबकि इसी दशक में प्रतानगर से 8.66 प्रतिशत नरेन्द्रनगर में 3.18 प्रतिशत कीर्तिनगर में 2.11 प्रतिशत भिलगंना में 2.46 प्रतिशत जाखणीधार में 5.16 थौलधार में 14.54 प्रतिशत चम्बा में 7.28 प्रतिशत देवप्रयाग में 1.13 प्रतिशत रही है।

जनसंख्या वृद्धि का क्षेत्रीय वितरण का प्रारूप– जनपद टिहरी गढ़वाल में विकासखण्ड स्तर पर जनसंख्या वृद्धि के परिवर्तनशील प्रारूप को तालिका 03 में स्पष्ट किया गया है। जिससे स्पष्ट है कि 1991–2001 में किसी भी विकासखण्ड में जनसंख्या में न्हास नहीं हुआ। जबकि 2001–2011 में केवल 04 विकासखण्डों में जनसंख्या ऋणात्मक थी। 1991–2001 के आंकड़ों के अनुसार सबसे कम जनसंख्या वृद्धि टिहरी गढ़वाल के 04 विकासखण्डों में 44.72 पायी गयी है। जिसमें प्रतापनगर, जाखणीधार, चम्बा, नरेन्द्रनगर देवप्रयाग विकासखण्ड आते हैं। वर्ष 2001 से 2011 के दशक में इस वर्ग के अन्तर्गत 07 विकासखण्ड थे जिसमें भिलंगना, जाखणीधार, थौलधार, चम्बा, नरेन्द्रनगर देवप्रयाग, कीर्तिनगर आते है मध्यम जनसंख्या वृद्धि में (10–20) 1991–2001 के दषक में टिहरी गढ़वाल के 03 विकासखण्डों जिसमें भिलंगना, थौलधार, कीर्तिनगर आते है। जबकि मध्य उच्च जनसंख्या वृद्धि 04–10 प्रतिशत के मध्य 2001–2011 के दशक में है। इस वर्ग में 01 विकासखण्ड प्रतापनगर

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

आता है। उच्च जनसंख्या वृद्धि 2001–2011 के दशक में जौनपुर आता है। उच्च जनसंख्या वृद्धि 2001–2011 दशक में (10–15) केवल 01 विकासखण्ड जौनपुर में रही है। जनपद टिहरी गढ़वाल में विकासखण्ड स्तर पर जनसंख्या का क्षेत्रीय विषमता का प्रारूप आश्चर्यजनक रहा है। विगत दोनों दशकों में जनसंख्या वृद्धि दर में हुए परिवर्तन को देखने से स्पष्ट होता है कि जनपद में 04 विकासखण्डों में जनसंख्या वृद्धि में ऋणात्मक परिवर्तन हुआ है। जबकि विकासखण्डों प्रतापनगर, भिलंगना, नरेन्द्रनगर, कीर्तिनगर में जनसंख्या वृद्धि (0–10) धनात्मक रही है। तथा जौनपुर में जनसंख्या वृद्धि (10–15) 10 से भी अधिक परिवर्तन रहा है। उपरोक्त आंकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि जनसंख्या वृद्धि के परिवर्तनशील स्वरूप में पर्याप्त विषमतायें विद्यमान है। टिहरी गढ़वाल में 04 विकासखण्डों में ऋणात्मक हुआ है। उपरोक्त शोध निष्कर्षो के आधर पर तथ्य इस ओर इंगित करते है, कि सुक्ष्म स्तरीय नियोजन में जनसंख्या वृद्धि में होने वाले परिवर्तनशील स्वरूप (ऋणात्मक एवं घनात्मक) का अध्ययन को आधार माना जा सकता है।

जनसंख्या घनत्व – जनसंख्या घनत्व किसी भी क्षेत्र विशेष में जनसंख्या का आधार एवं भूमि क्षेत्रफल का अनुपात सात किया जाता है। इसमें जनसंख्या वितरण की आर्दशतम स्थिति का अवलोकन होता है। किसी भी क्षेत्र का सांस्कृतिक, आर्थिक तथा सामाजिक विकास के लिए जनसंख्या घनत्व का अध्ययन आवश्यक है, घनत्व एक ऐसा माध्यम है जिसके आधार पर मानव पर्यावरण के परिवर्तनशील सम्बन्धों का मूल्यांकन किया जाता है जहां पर जनसंख्या अधिक होती है वहां का वातावरण मानवीय, पर्यावरणीय दृष्टिकोण से उपयुक्त होता है। भूगोल–वेताओं ने अंश या हर में परिमार्जन करके विभिन्न घनत्व अंकनों का विकास किया है जिसका अलग–अलग दृष्टि से महत्व है इन सभी का मुख्य उद्देश्य जनसंख्या और संसाधन सम्बन्धों को स्पष्ट करना है। गणितीय, कामिक कृषि, आर्थिक, पोषण घनत्व। क्लार्क, जे0 आई (1972) जनसंख्या घनत्व संकल्पना मनुष्य के क्षेत्रीय वितरण प्रारूप को स्पष्ट करने का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण हथियार है। तालिका 04 में जनपद टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड व भारत के 1971 से 2011 तक का जनसंख्या घनत्व को प्रदर्शित किया जाता है। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि 1971 में टिहरी गढ़वाल जन घनत्व 131 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 था। जो राज्य के औसत 10 से अधिक एवं राष्ट्र के 216 से कम था। वर्ष 1991 में टिहरी गढ़वाल का जनसंख्या घनत्व 128 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 था। जो राज्य के औसत 133 से कम व राष्ट्र के 274 से भी कम था। इस प्रकार 1981 से 1991 के दशक में जनसंख्या घनत्व में टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड और भारत में क्रमशः 03, 43, 58 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 की वृद्धि हुई। 2001 में जनपद टिहरी गढ़वाल का जनसंख्या घनत्व 154 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 था। जो राज्य के औसत 149 से कम तथा राष्ट्र के औसत 325 से भी कम रहा। जबकि 2011 में जनपद टिहरी गढ़वाल में 169 व्यक्ति वर्ग किमी0 जनघनत्व रहा। इसी दौरान उत्तराखण्ड में 189 व भारत में 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 रहा। वर्ष 2011 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि विगत 10 वर्षों की कालाबधी में (2001, 2011) राष्ट्रीय राज्य जनपद के स्तर पर जनसंख्या घनत्व में बहुत अधिक परिवर्तन देखने को मिलता है। भारत में जनसंख्या घनत्व में जहां 47 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 की वृद्धि हुयी वहीं उत्तराखण्ड में 189 व्यक्ति प्रति वर्ग व टिहरी गढ़वाल के विकासखण्डों का जनसंख्या घनत्व प्रतापनगर 271, भिलंगना 102.6, जाखणीधार 198, जौनपुर 148.9, थौलधार 206.6, चम्बा 177.3 नरेन्द्रनगर 282.6, देवप्रयाग 123.1 व कीर्तिनगर में 256.2 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 रहा।

जनपद टिहरी गढ़वाल उत्तराखण्ड एवं भारत वर्ष में जनसंख्या घनत्व व्यक्ति/वर्ग किमी0

क्र0सं0	व ा	टिहरी गढ़वाल		उत्तराखण्ड		भारत	
		जन घनत्व	परिवर्तन	जन घनत्व	परिवर्तन	जन घनत्व	परिवर्तन
1	1981	131	–	90	–	216	–
2	1991	128	3	133	45	274	56
3	2001	154	26	159	26	325	51
4	2011	169	15	189	30	382	57

जहां तक विकासखण्ड स्तर पर जनसंख्या घनत्व को परिवर्तन का संबंध है। सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व में परिवर्तन नरेन्द्रनगर विकासखण्ड 282.6 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 रहा है। जिसका मुख्य कारण गढ़वाल मण्डल के पहाड़ी भागों से पलायन रहा है। जबकि कीर्तिनगर ब्लॉक में शिक्षा व स्वास्थ्य की सुविधाओं को देखकर स्थिति अच्छी होने के कारण यह अन्य क्षेत्रों से पलायन किया।

जनसंख्या घनत्व का वितरण प्रारूप 2001– जनपद टिहरी गढ़वाल में जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण प्रारूप के अध्ययन को समझने के लिए जनसंख्या घनत्व 1991 और 2001 के विकासखण्ड स्तर के आंकड़ों का अध्ययन किया गया है। इन्हें जनसंख्या घनत्व के आधार पर 03 भागों में बांटा गया है। न्यून जनसंख्या धनत्व वाले भाग 2 मध्य जनसंख्या घनत्व वाले भाग

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

3 उच्च जनसंख्या घनत्व वाले भाग वर्ष 2001 में सबसे कम जनसंख्या घनत्व विकासखण्ड भिलंगना (250.7 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 था) इस प्रकार जनसंख्या घनत्व का विस्तार 153 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 पाया गया यह जनसंख्या घनत्व के क्षेत्रीय वितरण प्रारूप मे असमानता का द्योतक है। तालिका 04 से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में जिन विकासखण्डों का घनत्व 100 से कम था उन्हें न्यून जनसंख्या घनत्व वाले वर्ग में रखा गया है। इस वर्ग में आने वाले वर्ग विकासखण्डों की संख्या 1 थी मध्य जनसंख्या (100–200) की क्षेत्रों में जौनपुर, चम्बा, देवप्रयाग विकासखण्ड रहें हैं। उच्च जनसंख्या घनत्व वाले वर्ग (200 से अधिक) प्रतापनगर, जाखणीधार, थौलधार, नरेन्द्रनगर, कीर्तिनगर विकासखण्ड शामिल है। जनसंख्या घनत्व के संदर्भ में क्षेत्रीय विषमता का विश्लेषण किया जाय तो इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि घनत्व के संदर्भ में प्रतापनगर विकासखण्ड में क्षेत्रीय विशमता देखने को मिलती है।

जनसंख्या घनत्व का वितरण प्रारूप 2011– तालिका 04 से स्पष्ट है कि 2011 में 150 व्यक्ति प्रति किमी0 से कम जनसंख्या घनत्व वाले भागों को निम्न वर्ग में रखा गया। इसके अन्तर्गत 07 विकासखण्ड आते हैं जो कुल जनपद के विकासखण्डों का 66.76 प्रतिशत हैं मध्य जनसंख्या घनत्व क्षेत्रीय (150–200) के अन्तर्गत 01 विकासखण्ड सम्मलित है जो जनपद के विकासखण्डों का 21.58 प्रतिशत है। उच्च जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों (200 से अधिक) में केवल 01 विकासखण्ड शामिल हैं। जो जनपद की जनसंख्या घनत्व का 11.66 प्रतिशत था। यह स्पष्ट करना आवष्यक है कि जनपद टिहरी गढ़वाल में वर्ष 2011 में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व नरेन्द्रनगर (282.6 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0) का रहा है। जबकि सबसे कम जनसंख्या घनत्व भिलगंना विकासखण्ड (102.6 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0) का था इस प्रकार 180 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 का विस्तार मिलता है। जो इस तथ्य को इंगित करता है। कि वर्ष 2011 में भी जनसंख्या घनत्व के वितरण प्रारूप में पर्याप्त असमानता विद्यमान रही है। जनपद टिहरी गढ़वाल के जनसंख्या घनत्व में विषमता क्षेत्र के भौतिक तथा सांस्कृतिक तत्वों में विद्यमान असमानता के मुख्य कारण है। जनपद के ऐसे विकासखण्ड जहां पर जन सुविधायें, अवस्थापनात्मक विकास, छोटे–छोटे कस्बाई बाजारों का विस्तार एवं विकास के साथ पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध है। वहां पर जनसंख्या घनत्व अधिक और जहां पर पर्यावरणीय परिस्थितियां अनुकूल नहीं है, वहां पर जनसंख्या घनत्व कम रहा है।

जनसंख्या घनत्व का परिवर्तनशील प्रारूप– प्रस्तुत शोध से ज्ञात हुआ है कि जनपद टिहरी गढ़वाल के जनसंख्या घनत्व में विकासखण्ड स्तर पर 2001 व 2011 के मध्य विशिष्ट परितर्वन देखने का मिला है। जनपद टिहरी गढ़वाल के विकासखण्ड में ऋणात्मक एवं धनात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। जिन विकासखण्डों के जनसंख्या घनत्व में 125 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 से कम वृद्धि आंकलित की गई उनकी संख्सा 03 थी इसमें भिलंगना, चम्बा, देवप्रयाग विकासखण्ड शामिल हैं, जिन विकासखण्डों में 125–250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 की अभिवृद्धि हुई है। उन्हें मध्यम परिवर्तन श्रेणी में रखा गया है, इसके अन्तर्गत जाखणीधार, जौनपुर, थौलधार, विकासखण्ड है। जबकि 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 से अधिक विकासखण्डों में प्रतापनगर, नरेन्द्रनगर, कीर्तिनगर को शामिल कर उच्च वर्ग में रखा गया है।

सुझाव – जनसंख्या वृद्धि रोकने एवं पिछड़े ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र में रोकने के लिये निम्नांकित उपाय प्रस्तुत हैं।

1– पर्वतीय गांवों में जन–जागरूकता अभियानों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाय। ताकि परिवार–नियोजन के कार्यक्रम सफल हो सके।

2– बालिका शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाय। बेटा–बेटी एक समान के विचार का खूब प्रचार एवं प्रसार होना चाहिए।

3– ग्राम स्तर पर उन पंचायनों को प्रोत्साहित किया जाय एवं खण्ड विकास स्तर पर उन्हें जनसंख्या नियन्त्रण के लिए विशेष अनुदान राशि प्रदान की जाय जहां जनसंख्या पर नियन्त्रण है।

4– सरकार एवं गैर सरकारी संगठन उन गांवों पर विशेष नजर रखे जहां जनसंख्या वृद्धि हो रही है, एवं भविष्य में सही एवं सटीक कार्यनीति जनसंख्या कम करने के लिए बनायें।

5– परिवार नियोजन एवं कल्याण कार्यक्रम को संचालित करने वाले समूह लगातार उन गांवों की मॉनिटरिंग करते रहे कि जो कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं उसके परिणाम क्या है।

6– टिहरी गढ़वाल ने जनसंख्या का संकेन्द्रण पर्वतीय टाउनों में हो रहे है गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार की कमी है।

7– पर्वतीय टाउन जो जनसंख्या के केन्द्र बन रहे हैं उन्हें रोकने के लिये गांवों में जन–सुविधाओं का विस्तार करना चाहिए।

निष्कर्ष – आज विश्व के सामने विकासशील देशों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के चलते गरीबी, बेकारी बढ़ने के साथ अनेक समस्यायें उत्पन्न होती जा रही है। हालांकि देश के संसाधनों में भी बढ़ोत्तरी होती है लेकिन जनसंख्या वृद्धि की तुलना में वह अपेक्षाकृत नहीं बढ़ पाती। जबकि भारत के समझ विशेषकर पर्वतीय क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि एवं पलायन एक बड़ी चुनौती

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

बनती जा रही है। इस बढ़ती जनसंख्या के समुचित विकास के लिए समय–समय पर सरकारी एवं गैर सरकारी योजनायें संचालित की गयी है। जनसंख्या किसी भी क्षेत्र अथवा प्रदेश की प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर नहीं होती वरन वह सामाजिक, आर्थिक, प्राविधिक व राजनीतिक दशाओं पर भी निर्भर करती है। पर्वतीय भू–भागों में जनसंख्या नियन्त्रण करने के लिए जमीनी स्तर पर ऐसी पंचायतों को पुरस्कृत करना जो छोटे परिवार की विचारधारा को प्रचलित करने में शिशु मृत्यु–दर को कम करने तथा सामान्य जन्म दर को कम करने, 14 वर्ष के सभी बच्चों को अनिवार्य शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करते हों, साथ ही परिवार नियोजन के कार्यक्रमों को जनान्दोलन के रूप में चलाना होगा, जिससे सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं, बृद्धिजीवी व्यक्तियों की भागीदारी स्थानीय स्तर पर प्रभावी हो। डॉ0 एस0 चन्द्रशेखर "जनसंख्या की समस्या रातों–रात नहीं सुलझाई जा सकती है, सीमित परिवार के आदर्ष का सन्देश समुचित तरीकों एवं कार्य विधि से तब तक देश के कोने–कोने में पहुंचाना होगा, जब तक कि व्यक्ति यह भलीभांति न समझा जाय कि उनकी भलाई व परिवार का कल्याण तथा खुशहाली परिवार को नियोजित करने में ही है"।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Chandna R.C. (2001): Geography od population kalyami publishers new delhi.
2. Trewaeth G.T (1953) : A case of Population Geography Annals of the association of American Geography vol 43.
3. Clarke J.e. (1972) Population Geography Pergamon press oxford.
4. त्रिपाठी, रामदेव (2005) जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन 236, दाउदपुर, गोरखपुर।
5. Cecsus of India (2011).
6. Thompson lewis: population problem P 43.
7. Lee E. A Theory of Migration in Population Geography A Realer Edited by Demo 1970 P. 288-293.
8. Mukerjee A Economics Review July 5 1966 P 15.
9. काशीनाथ एवं जगदीशसिंह : आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, तारा पब्लिकेशन्स वाराणसी।
10. Lal H (1986) जनसंख्या भूगोल वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
11. Chandna R.C. (1980) Intorduction to population Geography Kalyani Publishers New Delhi.
12. Gosal G.S. (1982) recent Population Growth in India population Geography vol. 4. P 33-53.
13. श्रीवास्तव, पी0के0, परसरामपुर विकासखण्ड (जनपद बस्ती) में जनसंख्या वृद्धि का भौगोलिक अध्ययन, भूतल June 2012, Vol 03 No. 1.

*****